मधुबन ओम् शान्ति अंक 265 अगस्त 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(12-07-14)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा पूर्वज और पूज्यपन के ऊंचे स्वमान में रह सर्व को सम्मान देने वाली, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबको ड्रामा की हर न्यारी प्यारी सीन देखते सदा अचल अडोल एकरस स्थिति में रहने का वरदान मीठे बाबा ने जन्म से ही दिया है। मैं अभी अहमदाबाद लोटस हाउस से आप सबको मिल रही हूँ। मधुबन की सीन तो कितनी सुन्दर है, सब तरफ की टीचर्स बहिनें योग भट्ठी और सम्मान समारोह के लिए आई हुई है। मैं उनसे वीडियो कान्फ्रेन्सिग द्वारा मिल रही हूँ। कल भी सबको यादप्यार भेजी थी। याद और प्यार यही दो बातें सदा सामने रहती हैं, याद में प्यार है, प्यार में याद की कशिश है। मुझे तो सारे विश्व से प्यार मिल रहा है। मेरी यही भावना है कि जिन्होंने साकार वा अव्यक्त पालना ली है उनकी याद ऐसी हो जो हर एक समझे कि ईश्वर का प्यार क्या होता है! और कोई बात याद न रहे। अन्दर की सच्चाई है, संकल्प शुभ और श्रेष्ठ हैं तो नेचर भी शुभ बन जाती है। सुख देना और सुख लेना, यह कितनी अच्छी नेचर बाबा ने बनाई है इसलिए न कभी किसी को दु:ख देते हैं, न दु:ख लेते हैं। मेरे लाइफ का अनुभव है कि मुझे मेरे मीठे बाबा की और पूरे परिवार की दुआयें ही चला रही हैं। यह दुआयें ही मेरी दवा है। अभी मेरी तबियत बहुत अच्छी है।

बाकी सर्व के प्रति मेरी यही भावना है कि हर एक अपने-अपने स्थानों का वायुमण्डल बहुत अच्छे से अच्छा शक्तिशाली बनाकर रखे। आप सब जानते हो जैसी वार्ता होती है वैसा वायुमण्डल बनता है, इसलिए बोलचाल पर पूरा ध्यान देना है। अन्तर्मुखी रह योग का ऐसा किला बनाओ जो माया सूक्ष्म रूप में भी प्रवेश न कर सके। हर स्थान निर्विघ्न, हर बाबा का बच्चा विजयी बच्चा हो। बातें कैसी भी हों, सोच-सोच कर उन्हें बड़ा नहीं बनाना। महारथी वह है जो बड़ी बात को भी छोटा बना दे। जो बातें चींटी के बराबर है, महारथी के लिए कोई बड़ी बात नहीं, लेकिन चींटी कान में चली गई तो महारथी को भी बेहोश कर देती है इसलिए बाबा कहते बच्चे हियर नो ईविल, सी नो ईविल, टॉक नो ईविल, थिंक नो ईविल... अधिक सोचने की आदत भी शान्त रहने नहीं देती है।

तो राखी की बेहद सेवाओं के साथ-साथ ऐसी सूक्ष्म चेकिंग करते हुए अपने मन-वचन-कर्म को श्रेष्ठ वा शुभ बनाना है। सत धर्म हम ब्राह्मणों से स्थापन होता है, उस सत धर्म में बहुत ताकत है। तो मेरे अन्दर जरा भी झूठ-कपट न हो। सच्चाई और अहिंसा की बहुत वैल्यु है। तो ऐसे मनन, चिंतन, मंथन, सिमरण करते सब चिंताओं से मुक्त सदा निश्चयबुद्धि निश्चिंत रहना है। बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें ऐसा ही अनुभव करते हो ना! विजय की निश्चित भावी बनी पड़ी है। सब अच्छा ही होगा इसलिए हमारे श्वांस, संकल्प, स्वभाव सबमें मधुरता और सरलता हो। दिल सच्ची हो, दिमाग ठण्डा हो, स्वभाव सरल हो, इसी लक्ष्य और लक्षण को स्वरूप में लाते अब अपनी चलन और चेहरे द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना है। अच्छा

ऐसी श्रेष्ठ और शुभ भावनाओं के साथ **रक्षाबंधन** और आने वाली भविष्य सतयुगी दुनिया के लाडले **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** के पावन पर्व की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां।

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

स्व-स्थिति द्वारा परिस्थितियों पर विजयी बनो

1) स्वस्थिति की शक्ति से किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते हो। स्वस्थिति अर्थात् आत्मिक स्थिति। पर-स्थिति व्यक्ति वा प्रकृति द्वारा आती है। अगर स्वस्थिति शक्तिशाली है तो उसके आगे पर-स्थिति कुछ भी नहीं है। प्रकृति के भी मालिक आप हो। आपके परिवर्तन से प्रकृति का परिवर्तन होता है। इस समय आप सतोप्रधान बन रहे हो तो प्रकृति भी तमो से सतो में परिवर्तन हो रही है।

2) स्वस्थिति अर्थात मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्थिति में स्थित रहो तो सर्व परिस्थितियों को सहज पार कर लेंगे। इस स्थिति में स्वभाव अर्थात् सर्व में स्व का भाव अनुभव होता है। और अनेक पुराने स्वभाव समाप्त हो जाते हैं। स्वभाव अर्थात् स्व में आत्मा का भाव देखो, फिर यह भाव-स्वभाव की बातें सब समाप्त हो जायेंगी।

3) स्व-स्थिति में सदा स्थित रहने के लिए चार मुख्य बातें आवश्यक हैं। वैसे भी सदा सुख, शान्तिमय जीवन तब बन सकती है जब जीवन में चार बातें हों - हेल्थ, वेल्थ, हैपी और होली। अगर यह चार बातें सदा कायम रहें तो दु:ख और अशान्ति कभी भी जीवन में अनुभव न हों। ऐसे स्व-स्थिति का स्वरुप भी है सदा सुख-शान्ति-आनन्द-प्रेम स्वरुप में स्थित रहना। इस स्वरूप में रहो तो परिस्थितियां स्वत: परिवर्तित हो जायेंगी।

4) जो श्रेष्ठ स्मृतियों के आधार से सदा समर्थ बने है, उनकी स्व-स्थिति को कोई भी परिस्थिति डगमग नहीं करेगी। वे परीक्षाओं को खेल समझकर चलेंगे। अगर खेल में किसी प्रकार की परिस्थिति देखते हो तो डगमग होते हो क्या? कोई मरे वा कुछ भी हो लेकिन स्थिति डगमग नहीं होगी क्योंकि समझते हैं यह खेल है। ऐसे ही परिस्थितियों को एक पार्ट समझो। परिस्थिति के पार्ट को साक्षी हो देखने से डगमग नहीं होंगे, मुरझायेंगे नहीं, मजा आयेगा। मुरझाते तब हैं जब ड्रामा की प्वाइन्ट को भूल जाते हैं।

5) जो निश्चयबुद्धि हैं उन्हें किसी भी प्रकार की चिंता वा चिन्तन नहीं होगा। क्या हुआ? क्यों हुआ? ऐसे नहीं होता – यह व्यर्थ चिंतन है। निश्चयबुद्धि कभी व्यर्थ चिन्तन नहीं करेगा। सदा स्वचिन्तन में रहने वाले, स्वस्थिति में रहने से परिस्थिति पर विजय प्राप्त करते हैं।

6) सदा स्वचिंतन में रह सुख के सागर में समाये रहो तो कोई भी परिस्थिति से किनारा हो जायेगा। बाप को सामने लाने से कोई भी परिस्थिति परिवर्तन हो जायेगी। जब तक स्वस्थिति शक्तिशाली नहीं है तब तक परिस्थितियों पर विजय नहीं होती। परिस्थिति प्रकृति द्वारा आती है इसलिए परिस्थिति रचना हो गई और स्वस्थिति वाला रचता है। रचता कभी रचना से हार नहीं खा सकते।

7) सदा मास्टर रचता अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट होकर रहो। जब आप अपनी सीट छोड़ते हो तब हार होती है। सीट पर सेट होने वाले में शक्ति होती है, सीट छोड़ी तो शक्तिहीन। तो मास्टर रचता की सीट पर सेट रहना है, सीट के आधार पर शक्तियाँ स्वत: आयेंगी।

8) कल्प पहले भी यादगार में रावण की सेना ने हिलाने की कितनी कोशिश की लेकिन अंगद अचल रहा। तो परिस्थितियाँ आयेंगी और चली जायेंगी, स्वस्थिति सदा आगे बढ़ायेगी। परिस्थिति के पीछे भागने से स्वस्थिति चली जायेगी। कोई भी परिस्थिति आये तो आप हाई जम्प दो, इससे पार हो जायेंगे।

9) परिस्थिति आना भी गुड-लक है। यह पेपर फाउन्डेशन को मजबूत करने का साधन है। यह निश्चय को हिलाकर देखने के लिए आते हैं। एक बारी अंगद समान मज़बूत हो जायेंगे तो यह नमस्कार करेंगी। पहले विकराल रूप से आयेंगी फिर दासी रूप से आयेंगी।

10) यह देह भी पर है, स्व नहीं इसलिए देह के भान में आना, यह स्व-स्थिति नहीं है। स्व-स्थिति व स्वधर्म सदा सुख का अनुभव करायेगा और प्रकृति-धर्म अर्थात् परधर्म या देह की स्मृति किसी-न-किसी प्रकार के दु:ख का अनुभव जरूर करायेगी। तो जो स्वस्थिति में होगा वह सदा सुख का अनुभव करेगा। अगर दु:ख की लहर आती है तो सिद्ध है स्वस्थिति से, स्वधर्म से नीचे आ गये।

11) जैसे विमान द्वारा उड़ते हुए कितने पहाड़, कितने समुद्र पार कर लेते हैं क्योंकि ऊंचाई पर उड़ते हैं। तो ऊंची स्थिति में रहने से परिस्थितियों को सेकेण्ड में पार कर लेंगे। ऐसे लगेगा जैसे पहाड़ को वा समुद्र को भी जम्प दे दिया। मेहनत का अनुभव नहीं होगा।

12) एक है अपनी स्वस्थिति में रहना। दूसरा है कारोबार में आना। स्वस्थिति में तो सभी बड़े हो कोई छोटे नहीं इसलिए स्वस्थिति के श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठो। सिंहासन पर बैठ करके शक्ति रूपी सेवाधारियों का आह्वान करो, आर्डर दो। हो नहीं सकता कि आपके सेवाधारी आपके आर्डर पर न चलें। फिर ऐसे नहीं कहेंगे क्या करें सहन शक्ति न होने के कारण मेहनत करनी पड़ती है। समाने की शक्ति कम थी इसलिए ऐसा हुआ।

13) स्व स्थिति ही सेवा की उन्नति के लिए सहज सिद्धि वा सहज साधन है। स्व की उन्नति के बिना सेवा की उन्नति अविनाशी, निर्विघ्न नहीं बनेगी इसलिए दोनों का बैलेन्स हो। स्व उन्नति को छोड़ सिर्फ सेवा की उन्नति नहीं करो। साथ-साथ करो। नहीं तो जिनके निमित्त बनते हैं वह भी कमजोर होते। उन्हों को भी बहुत मेहनत करनी पड़ती इसलिए स्व उन्नति, सेवा की उन्नति सदा ही साथ रखते हुए उड़ते चलो।

14) सरकमस्टांस भले कैसे भी हों लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे सरकमस्टांस में अपनी स्वस्थिति की शक्ति से सदा विजयी अनुभव करेंगे। चाहे दुनिया वाले लोग वा ब्राह्मण परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क में दूसरा समझे वा कहे कि यह हार गया – लेकिन वह हार नहीं है, जीत है। कोई भी सेवा की, संगठन की, प्रकृति की परिस्थिति स्वस्थिति को वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग करती है तो यह भी बन्धनमुक्त स्थिति नहीं है। इस बन्धन से भी मुक्त बनो।

15) पुरानी दुनिया में पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में न लाये। एक है व्याधि आना, एक है व्याधि हिलाना। तो व्याधि आना यह भावी है लेकिन स्थिति हिल जाना - यह बन्धनयुक्त की निशानी है। स्वचिन्तन, ज्ञान चिन्तन, शुभचिन्तक बनने का चिन्तन बदल शरीर की व्याधि

का चिन्तन चलना - इससे मुक्त बनो क्योंकि ज्यादा प्रकृति का चिंतन चिंता के रूप में बदल जाता है।

16) स्वस्थिति में स्थित रहने वाला कभी परिस्थिति से घबराता नहीं है क्योंकि नॉलेजफुल आत्मा हो गई। तीनों कालों की, सर्व आत्माओं की नॉलेज है। नॉलेजफुल वा त्रिकालदर्शी कभी घबरा नहीं सकते। सदा ही किसी भी परिस्थिति में मुस्कराते रहेंगे। हर्षित होंगे, परिस्थिति से आकर्षित नहीं होंगे। परिस्थितियां और ही महावीर बनाती हैं। कितना भी कोई हिलावे लेकिन आप अचल रहो।

शिवबाबा याद है ? 27-2-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"निर्भय निर्वैर बनना है तो किससे भी वैर-भाव, बदला लेने की भावना न हो"

(दादी जानकी)

पहला ओम् शान्ति मैं कौन? दूसरा ओम् शान्ति मेरा कौन? तीसरा ओम् शान्ति मुझे क्या करना है? संगमयुग है। मैं कहेंगी तो अन्दर जायेंगी, मेरा कहेंगी तो ऊपर जायेंगी। फिर जो बाबा करा रहा है वो करो। श्रीमत में मनमत वा कोई विचार भी नहीं। कोई विचार आया फौरन सुनाया, काम पूरा हो गया। बाबा को अच्छा लगता है उसके इशारे अनुसार चलना। समय अनुसार क्या करना है, वो कैच होगा इसलिए मूँझना नहीं है। बुद्धि में टच होगा, अभी ऐसी स्थिति बनाने के लिए पूरा अन्तर्मुखी रहने की नेचर हो। अर्न्तमुखता और बाहरमुखता का बहुत कॉन्ट्रास्ट है। थोड़ी भी बाहरमुखता सुनने, बोलने, देखने में है तो रिकार्ड अच्छा नहीं माना जायेगा। दिन भर में अन्तर्मुखता रहे तो रिकॉर्ड अच्छा रहेगा। समय और बाप, बाप कहेगा ठीक है बच्ची समय को सफल कर रही है। समय कहेगा मैं तुमको साथ देता हूँ, जब बाबा साथ देता है तो साक्षी हो करके नेचरल पार्ट प्ले कर सकते हैं। मेरा कहूँ, हमारा कहूँ, हमारा कहा तो जैसे आप सबको मिला करके कह रही हूँ, हम सबका बाप एक है। कोई है क्या जिसका दूसरा कोई बाप हो? यहाँ कोई बैठा है क्या? कोई नहीं। जिसने हमको अलौकिक जन्म दिया है, पालना भी दिया है वो बहुत अच्छा है। यह ब्रह्मा बाबा डिटैच रहना सिखाता है इसलिए उनसे अटैच हैं, अच्छा लगता है, जितना डिटैच उतना रूहानी स्नेह में सम्पन्न। तो प्युरिटी, पीस, लॅव, नॉलेज में सबका ध्यान जाता है।

जब टॉवर ऑफ पीस के सामने आओ तो प्रैक्टिकली यह सब अनुभव होता है, खींच होती है। साइलेंस में चारों ही अनुभव होते हैं। जहाँ अग्नि संस्कार हुआ था, बड़ी पॉवर है उसकी वहाँ। जिस समय हो रहा था मैं सामने बैठ देख रही थी, 21 जनवरी 1969 को।

तो हर एक देखे मेरे लाइफ में और कोई बात तो नहीं है? जो औरों का स्वभाव देखते हैं, वर्णन करते हैं उनका वो स्वभाव कौन-सा है? तो गहरे पुरुषार्थ में, स्व में भाव भावना फिर भाषा ऐसी होगी जैसे मेरे बाबा की भाषा। वो हर एक बच्चे को जानता है, मेरा कल्प पहले वाला बच्चा है। सदा यह स्मृति रहे हाँ, कल्प पहले बाबा से मिले थे, इतने बड़े परिवार से मिले थे। साकार में जो अच्छी पालना दी, उसकी वैल्यु का पता विदेश में जा करके हुआ। ऐसे बच्चे निकलेंगे जो और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं, वो वापस आयेंगे। थे भारतवासी परन्तु और देशों में चले गये या और धर्मों में कनवर्ट हो गये। तो कल्प पहले वाले जो भावना वाले शब्द हैं वो बहुत अच्छे हैं। यह जो आज की सीन है फिर रिपीट नहीं होगी। कल्प के बाद होगी। जिस जगह पर बैठे हैं, जैसे सुन रहे हैं, जैसी ट्रांसलेशन हो रही है फिर कल्प के बाद होगा।

निराकार साकार में प्रवेश हुआ, साकार ने निराकार के साथ से अव्यक्ति स्थिति को प्राप्त किया, वो यहाँ ही देखा। बाबा का जो बोल-चाल था वो सब अव्यक्त हो गया था। बाबा साकार में होते, भासना ऐसी देता था जो आज दिन तक वो भासना चला रही है। भासना से भावना ऐसी पक्की है, कोई बात का निर्णय लेना हो तो बाबा के कमरे में बैठ जाओ। यह भावना है ना और कोई स्वभाव नहीं है मेरे में, मैं समझती हूँ क्योंकि यह भी कोई कहे ना तो गई इज्जत... तो शान है ना। स्व भावना में, स्वभाव में सबके लिए मित्रता भाव है। हम एक बाबा के बच्चे हैं, कल्प पहले वाले हैं, भावना है। तो अपने स्व-भावना अनुसार बाबा की श्रीमत को पालन करने वाले का वो स्वभाव बन जाता है। तो सारा दिन कोई और याद नहीं होता है। तो जब संगठन में आ करके बैठते हैं तो वायब्रेशन बहुत अच्छे पॉवरफुल हो जाते हैं। सारे दिन का जो रिकॉर्ड है, कोई भी बात हो, बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश, सारा दिन ऐसे बीते। फिर यहाँ आते हैं तो वायब्रेशन बड़े पॉवरफुल हो जाते हैं। ऐसा सच्चा बाबा का बच्चा इस वायब्रेशन को खेंचके क्लास में जरूर आयेगा।

कोई कमजोरी है तभी डर लगता है। सर्वशक्तिवान बाबा मेरे साथ है तो डर नहीं लगेगा। चेक करना है अपने आपको और निर्भय निर्वैर बनाना है। किससे भी वैरभाव होगा तो बदला लेने की भावना होगी, थोड़ा डर रहेगा। तो यह भी चेक करना है, सारे परिवार में मैं यह चेक करती हूँ, मुझे डर नहीं है। सारी लाइफ के अन्दर ईश्वरीय परिवार के लिए प्यार है। बॉडी-कॉन्सेस में रहने की आदत होने के कारण थोड़ा भी कुछ शरीर में होता है, दर्द है, टू मच है, शक्ल ऐसी बनायेंगे जैसे सबसे दुःखी आत्मा हैं। तो फेस से ही कोई बात फेश कर सकते हैं। मैं कैसे फेश करूँ? ऐसे करो, ताली बजाओ। क्या बड़ी बात है! जैसे बाबा ने किया है वैसे फेश करके फरिश्ता बनना है। बाबा ने ऐसा सुख दिया है जो दुःखहर्ता सुखकर्ता बना दिया है।

दूसरा क्लास

"अपना रिकॉर्ड अच्छा रखना है तो बाबा की हर बात को रिगार्ड देते चलो, रिकॉर्ड अच्छा रखना ही राज्य पद वा प्रजा पद का आधार है" (दादी जानकी)

अमृतवेला और नुमाशाम यह दोनों बातों में कोई बहाना नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसा संगठन फिर सारे कल्प में नहीं मिलेगा। इतना संगठन से प्रेम है, सुख है तो वो प्रेम, वो सुख खैंचके ले आता है। अकेला बैठेंगे याद करेंगे, कोई-न-कोई काम मिल जायेगा तो उठके खड़े हो जायेंगे। यहाँ (संगठन) से कोई नहीं खींचता है, जिसको आना है यहाँ आ जाये। तो संगमयुग के समय का महत्व हो और हमारी संगम की याद एक्यूरेट रहे तो बाबा कहेगा बहुत अच्छा। कोई भी कारण से अगर और कोई बात याद आई... नहीं आयेगी। बाबा की बातों को न बिसरो, बाकी कोई बात याद नहीं करो, इतना अच्छा यह मंत्र है, इससे बहुत खुशी रहेगी, और इस खुशी में बड़ी कमाई है। कमाई की खुशी है। हमारी यह साधारण खुशी नहीं है, सदाकाल की खुशी है इसलिए ऐसी पढ़ाई को पढ़ते-पढ़ते थकते नहीं हैं क्योंकि इस पढ़ाई में शक्ति है। बाबा की एक एक बात को जितना रिवाइज़ करते हैं, उतना शक्ति का अनुभव होता है।

कोई-न-कोई बाबा के बच्चों को, कोई-न-कोई स्व-उन्नति एवं विश्व सेवा में इन्वेन्शन की टचिंग आती है, जो उनके कार्य से उनका भी भाग्य और सेवा में भी कुछ यादगार बन जाता है। अभी देखो क्या भण्डारा बनाया है। कमाल है बाबा के बच्चों की। पहले तो सब काम हम खुद ही करते थे तो वो दिन भी प्यारे थे जो शिवबाबा साथ हमारे थे। शिवबाबा ब्रह्माबाबा में आया एक्यूरेट बनाने के लिए, पढ़ाई और पालना ऐसी वन्डरफुल दी है। एक बार बाबा ने 36 प्रकार का भोजन बनवाया और कहा कि अभी जितना चाहे उतना खाओ। फिर रात को पूछा कौन-सी चीज़ अच्छी थी? तो किसी ने कहा यह अच्छा था, किसी ने कहा यह अच्छी थी, तो बाबा ने कहा फेल। फिर दूसरे तीसरे दिन ऑर्डर किया सिर्फ डोडा, छाछ और दाल मिलेगी, आज इतना ही मिलेगा और कुछ नहीं मिलेगा। जिसको यही खाना खाना हो वही रहे, जो नहीं खा सकते हैं वो जाके सो जाये माना जहाँ कोई बीमार रहते हैं वहाँ जाके रहें। तो वन्डर तो यह हुआ जो अच्छे तन्दुरूस्त उनको लगा मैं बीमार न पड़ जाऊं इसलिए वो गये और जो बिचारे बीमार भी थे वो बैठ गये लस्सी डोडा खाने के लिए। उनकी बीमारी चली गई। जैसे दादी गुल्जार और कुछ नहीं बोलेगी जो बाबा ने कहा है वही किया है, इसका रिकॉर्ड है। कभी भी रिकॉर्ड हमारा खराब न हो माना बाबा का रिगार्ड रखना। जिसको बाबा के लिए रिगार्ड है उसका रिकॉर्ड अच्छा होगा। है छोटी बात परन्तु सारा राज्य पद, प्रजा पद का आधार है - रिकॉर्ड अच्छा रखना।

रिकॉर्ड अच्छा रखना कितना शान है, अन्दर से लगता है परचिंतन नहीं, स्व-दर्शन चक्र फिराओ, बाबा की याद में रहने से ऑटोमेटिक बुद्धि ऊपर चली जायेगी। नेचुरल है ऊपर जो बुद्धि गई, तो नेक्स्ट स्वदर्शन, सारे चक्र की याद आ गयी। चक्र याद आने से झाड़ और बीज की याद आ गयी। बीज ऊपर है वो बीज नीचे होता है। परमधाम से आत्मायें जब नीचे आती हैं तब सीधा ही उनको दु:ख नहीं मिलता है। पर हम जो आत्मायें हैं सिर्फ शुद्ध नहीं हैं, बाबा ने हमारे में पवित्रता भी भरी है। पवित्रता क्या है? इस पर कम-से-कम आधा घण्टा विचार करो। पवित्रता और योगबल से बाबा नई दुनिया बना रहा है। पवित्रता से योग लगे, उसका बल मिले।

शिव शक्ति पाण्डव सेना को न मान चाहिए, न शान चाहिए, ऐसी स्थिति बनाना सिर्फ सौभाग्यशाली नहीं, पदमापदम भाग्यशाली हैं। ऐसी स्थिति बनाना माना बहुत कमाई करना जो गिनती नहीं कर सकते हैं। जब से बाबा समर्पण हुआ, बाबा ने नोट को हाथ नहीं लगाया। हमें भी कौन-सी कितने की है वो मालूम नहीं था, पर यहाँ सेवा में आ करके सीखना पड़ा। पहले आना दो आना चलते थे, कहते थे एक बारी आना, एक आना। एक बारी आने में भगवान कहता है कहाँ आये हो, किसके पास आये हो? मैं कहती हूँ मरना हो तो धक से मरो, हूँ हाँ करके नहीं मरो, अन्त मते सो गते ऐसे हो जायेगी।

पहले इतना ज्ञान भी नहीं था, अभी तो सारा ज्ञान सार रूप में भी स्पष्ट रूप में भी है, तो वे दिन भी अति प्यारे लगते थे, कोई आवे तो कुछ खिलाऊं बाबा का बच्चा बन जाये। बाबा का बच्चा बनना औरों को बाबा का बच्चा बनाना। तो विदेश में एक बार किसी ने कहा कि दादी गुल्जार ऐसे बार-बार बनाना, बनाना क्यों बोल रही है! इंगलिश में बनाना केले को कहते हैं। बनाना (केला) है, तो खा लो। एक केला – आये अकेले जाना अकेला, अकेला बैठके बाप को याद करना और कुछ काम नहीं है। बड़ा सहज ज्ञान है, मीठा ज्ञान है, कोई भी भाषा वाला समझ जाता है। वन्डर तो यह है विदेश में सेवा करते यह अच्छा अनुभव हुआ, हरेक को समझ में आ जाता था। जब बाबा के पास आये तो सिन्धी बोलते थे, बाबा में जब से शिवबाबा आया बाबा हिन्दी ही बोलता था और हम हिन्दी नहीं जानते थे। अभी भी हिन्दी कम पढ़ते हैं, मुरली हमको सिन्धी में मिलती है। भाषा हिन्दी है पर मुरली सिन्धी में मिलती, हम लोगों को यह एलाउ है। अभी तो हर भाषा में मुरली मिलती है पर मुरली वही है। पर बाबा ने हमारे में इतना परिवर्तन लाया, कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी भाषा भी कभी नहीं बोलते थे। कभी कोई कहेगा सिन्धी में बोलो, तो बाबा कहता था तुम बोलो मैं सिन्धी थोड़ेही हूँ। तो हर घड़ी दिल से बाबा निकले, तो बाबा के दिल से निकलेगा मेरा नूरे रत्न बच्चा, मेरा प्यारा बच्चा। जब बाबा के मुख से यह निकले, तो बच्चे को अन्दर से बड़ी खुशी होती है। अच्छा।

तीसरा क्लास

"संगमयुग है त्याग, तपस्या और सेवा के लिए, प्रैक्टिकल लाइफ में ब्रह्मा बाबा इसका आइना है"

(दादी जानकी)

बाबा ने हम सबके अन्दर बहुत खज़ाने भर दिये हैं। जितना बांटते हैं, उतना बढ़ते हैं, कभी खाली नहीं होते हैं। सिर्फ खुश रहने के लिए नहीं बल्कि खुशी बांटने के लिए यह सब खज़ाने दिये हैं। वैसे दुनियावी ब्राह्मणों को दान देते हैं, हम ब्राह्मण औरों को देते हैं, फर्क है ना। उनको दिया जाता है और हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण दाता बन गये हैं। तो हर एक अपने आपको देखे कि मैं ब्राह्मण हूँ? ब्रह्मा के मुख को देखो, बाबा की दृष्टि को देखो, कितनी वन्डरफुल है! अगर मेरा ऐसा मुख है तो ऐसे ब्राह्मण आत्मायें सबका उद्धार करने के लिए एडवांस पार्टी में जा रहे हैं उन सबके प्रति अति स्नेह है, शुभ भावना, शुभ कामना है।

हम ब्राह्मण कथावाचक हैं, सिर्फ पंडित की तरह कथा नहीं करते हैं। सत्य परमात्मा बाप के महावाक्यों से हम नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हैं। परन्तु हर एक की करनी को देखो, नारायण जैसी हो, लक्षण देखो लक्ष्मी नारायण के हैं! करने में लक्ष्मी, हिम्मत, विश्वास नारायण का, जो करना है अब कर ले, वो पूछने की बात नहीं है। हम ऐसी करनी करें, ऐसे दिल से पाठ करें जो कोई का कारणे अकारणे योग नहीं लगता, सेवा में विघ्न आते तो वो हट जायें, उनके कष्ट दूर हो जायें। हम जा रहे हैं ऊपर में, और आत्मायें सिर्फ देखती रह न जायें, वो भी हमारे साथ चलने की तैयारी करने में लग जायें। फिर हम ब्राह्मणों को गृहस्थी नहीं खिला सकते हैं बल्कि हम ही गृहस्थियों को खिला करके ब्राह्मण बनाते, कितना फर्क है!

मेरे मीठे मीठे बाबा ने कहा क्षत्रिय नहीं बनना है। क्षत्रिय युद्ध करता है बिचारा, करूँ न करूँ, क्या करूँ? कैसे करूँ? जो चिंता करता है वो वैश्य है इसलिए थोड़ी भी चिंता नहीं। चिंता ताकि कीजिए जो अनहोनी होए। होने वाला अच्छा ही है, जो कुछ होता है उसमें भला ही है, इसलिए यह क्यों हुआ.. की बात नहीं। क्षत्रिय कहता है मैं तो घबरा गई हूँ। जिसको चिंता है, वो व्यर्थ चिंतन छोड़ता नहीं है। चिंता वाले को व्यर्थ चिंतन छोड़ता नहीं है। व्यर्थ चिंतन ऐसा है उस घड़ी महसूस नहीं करता यह व्यर्थ है। व्यर्थ ऐसा रूप धारण करता है जो यह भी महसूस नहीं होता है कि यह व्यर्थ है। मैं तो अज़ब खाती हूँ। इसलिए इतना पॉजिटिव और प्युअर, पॉवरफुल संकल्प हो जो व्यर्थ कोई पास भी न आ सके। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के बाद क्या कहूँ, जो खराब संकल्प आता है अशुद्ध संकल्प आता है तो वे कौन हैं? किसी से वैर भावना होती है, बदला लेने का ख्याल आता है वो कौन है? नाम नहीं लूँगी। पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के भेंट में सोचो, थोड़ा भी यह ख्याल आता है तो वो कौन हुआ?

संगमयुग पर मेरे बाबा ने इतना अन्दर ही अन्दर परिवर्तन किया है, उस परिवर्तन की रिजल्ट आज इतनी बड़ी सभा सामने बैठी है। बाबा ने किया है, हम बच्चों से कराया है। हम ब्राह्मण सेवाधारी हैं। सेवा लेते नहीं है क्योंकि संगमयुग है ही त्याग, तपस्या और सेवा के लिए। प्रैक्टिकल लाइफ मेरे ब्रह्मा बाबा की देखी, ब्रह्मा बाबा आइना है। आज्ञाकारी है तो बाबा की श्रीमत सिरमाथे पर है, वफादार है, कभी बाबा के सिवाए किसी को याद नहीं किया और कभी याद आता नहीं, इतना ही नहीं देहधारी की याद आ नहीं सकती, क्योंकि अपनी देह ही भूल गई ना, तो देहधारी कहाँ याद आयेगा। ईमानदार है तो ट्रस्टी, मेरा कुछ नहीं, फरमानबरदार है तो हज़ूर के सामने सदा जी हाज़िर, बिना बुलाये ही हाज़िर हो जायेंगे, इतना प्यार इतना रिगार्ड हो।

बाबा कहता है यह याद रहे - यह हमारा अन्तिम जन्म है, 84 का चक्र लगाया है। अब बाबा के साथ मुक्तिधाम में वापस जाना है, सतयुग में आना है। मुक्तिधाम में तो सब जायेंगे, पर हम कैसे जायेंगे? न चाहते भी सबको जाना ही है। पुरुषार्थ न करें तो उसकी मर्जी, परन्तु हम पुरुषार्थ कर रहे हैं मुक्तिधाम में जाना है फिर साथ-साथ जीवनमुक्ति (सतयुग) में आना है, इसके लिए क्या पुरुषार्थ करना है? बहुतकाल से योग लगाने वाला ब्राह्मण योगी उसके लिए भगवान कहता है वो अन्त में मेरे साथ वापस चलेगा, तो देखो मैं उसमें हूँ? नहीं हूँ तो लगाओ अपने को चमाट, जल्दी सीधे हो जाओ। हिसाब-किताब चुक्तू करने के लिए खड़ा न होना पड़े। मैं क्या करूँ, हिसाब-किताब कड़ा है ना, क्या करूँ? कान बहरे हैं क्या? बाबा ने इतना सुनाया, इतना सुनाया है जो अन्धों की भी आँखें खुल जाती हैं, रास्ता क्लीयर हो जाता है। तो सुन सुन अन्धे पावे राह... जब यह गीत बजता था नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु... पग-पग ठोकर खाऊं मैं...। जागे हैं तो जगाओ... तू प्यार का सागर है... एक एक गीत देखो कितने अच्छे हैं, प्यार के सागर ने प्यार देके जगा लिया। ज्ञान पीछे मिला है पहले प्यार मिला है।

मैं आत्मा क्या हूँ, जब यह समझेंगे तब बाप को समझेंगे। हर एक आत्मा का पार्ट ड्रामा में अपना अपना है, तो जब भी बाप आता है अच्छी तरह से बताता है, दृष्टि देता है, उसको पहचान आ जाती है। दुनिया वाले को पता नहीं कि हम किसको पुकारते वा याद करते हैं वो जानते ही नहीं हैं। हम जानते हैं सर्वव्यापी नहीं है। आत्मा निर्लेप नहीं है। आत्मा जैसा कर्म करती है वैसा भोगना पड़ता है। आत्मा अगर निर्लेप है तो यह पापात्मा, पुण्यात्मा, महात्मा, धर्मात्मा, देवात्मा, परमात्मा क्यों कहते हैं? मैं कौन हूँ? बाप कौन हैं? यह सब आत्मायें हैं, पर हम यह नहीं कहेंगे यह ऐसी आत्मायें हैं... नहीं, आत्मायें हैं ना। अनादि आदि दोनों को समझो अच्छी तरह से। अभी क्या करने का है? मुक्तिधाम जाना है। इसके लिए बार-बार बाबा कहते मेरे को याद करो, पाप नाश हो जायेंगे।

और भी बाबा क्या करता है कोई मुझे पूछे तो मैं बताऊं, वन्डरफुल बाबा है।

एक तरफ हमारे को क्षमा करता है, हमने बहुत भूलें की हैं, दूसरा बहुत पाप किया है वो सब माफ करता है तो हल्के हो जाते हैं। याद में जो भी मैंने कुछ गलत किया ना वो सब क्षमा कर, कहता है बच्ची भूल जा। तुम सिर्फ मुझे याद करो तो जो किये हुए विकर्म हैं, विनाश हो जायेंगे। भगवान ने यह प्रैक्टिकली अनुभव कराया है। याद की कमाल है! जो मेरे विकर्मों के सब संस्कार विनाश हो गये हैं माना भूल से भी कोई संकल्प विकल्प, व्यर्थ संकल्प भी नहीं आ सकता है। तो हर एक अपने को चेक करे। सिर्फ अपने को देखो।

रॉयल वो है जिसके पास रीयल्टी है, सच्चाई है, प्रेम है। इतनी हमारी शक्ति हो जो ऐसे वायुमण्डल में आके कोई गलत काम कर नहीं सकता। गलत काम करने का भूल गया, अच्छा करने का उमंग आ गया, यह ऐसा स्थान है जो करना है सो अब कर लें। कभी भी नाउम्मींदी का ख्याल आ नहीं सकता, पहले मैंने किया पर सफलता नहीं मिली, ऐसे पहले वाली बात कुछ नहीं करता। करना है जो कुछ अब कर ले, कैसे? चुप, तुम सिर्फ शुद्ध, श्रेष्ठ, दृढ़ संकल्प करो तो सफलता है। जो बाबा करा रहा है वो करो, तो सबूत दे सको। तो प्रैक्टिकल मिसाल बनो जो बाबा बुलाके औरों को सामने सबूत दिखाके प्रेरणा देवे। जिसको अपनी कमी की महसूसता हो, उस कमी को दूर करने के पुरुषार्थ की लगन हो, तो बाबा देखता है बच्ची को एक छोटी-सी भूल में भी अटेन्शन है, तो बाबा भी मदद करता है, फिर अच्छा बनते बनते भला हो जाता है।

जिसको क्लास के लिए बहुत कदर है उसको बाबा प्यारा लगता है इसलिए वो कभी क्लास मिस नहीं करता है, लाठी लेकर भी क्लास में आता है, खींच होगी। तो हम शुरू से ले करके आज दिन तक अमृतवेला और क्लास कभी मिस नहीं किया होगा, साथ-साथ रात को जरुर गुडनाइट भी बड़े प्यार से करो, जो स्वप्न में भी बाबा, संकल्प में भी बाबा, तो बाबा को याद करने की हॉबी होवे तो बाबा की दिल से दुआयें अपने आप निकलती हैं। तो आप सभी ऐसा पुरुषार्थ करेंगे तो बाबा की दुआयें क्या से क्या बना देती हैं। बाकी यह शिवजयंती हमारे मरजीवा जन्म की बड़ी उत्तम जयंती है, उसकी बधाईयां हो, बधाईयां हो।

गुल्जार दादी जी से मधुबन के भाईयों की चिटचैट (प्रश्न भाईयों के उत्तर दादी जी के)

प्रश्न:- एक मुरली में बाबा ने कहा है कि तुम सिर्फ मुझे देखो और मेरी करेन्ट लो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे, तो क्या देखें? कैसे करेन्ट लें जो विकर्म विनाश हो जाये। अगर विकर्म विनाश हो रहे हैं तो उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- बाबा को देखेंगे तो बाबा के मस्तक में जो आत्मा बिन्दू है, उसको ही देखेंगे ना, उसी से ही शक्ति लेंगे। जब शक्ति लेंगे तो विकर्म भी विनाश होंगे। लेकिन उसी रीति से योग में बैठेंगे तो! लक्ष्य होगा तो लक्ष्य से हो जायेगा। विकर्म विनाश हो गये तो उसकी निशानी, हल्कापन आयेगा और खुशी होगी। जैसे कोई बीमारी खत्म होती है तो क्या फीलिंग आती है? ऐसे यह भी एक रौनक अपने मन के अन्दर अच्छी होगी। अटेन्शन होगा तो संस्कार भी चेंज होंगे। योग से ही पुराने संस्कार परिवर्तन होंगे। किसी भी रीति से योग लगाओ, योग तो अग्नि है उसमें संस्कार परिवर्तन जरूर होंगे। फिर वह संस्कार बीच-बीच में इमर्ज नहीं होंगे। जैसे कोई किचड़ा निकलता है, पेट ठीक नहीं है, पेट साफ हो जाता है तो कितना फर्क पड़ जाता है। ऐसे अपनी बुद्धि क्लीयर हो जायेगी तो अपनी मौज़ में रहेंगे। अन्दरूनी खुशी होगी। जैसे कभी कभी अचानक ऐसे होता है कि आज मुझे क्या हुआ है जो अन्दर ही अन्दर बहुत खुशी हो रही है। ऐसे भिन्न-भिन्न अनुभव हो सकते है।

प्रश्न:- बाबा मुरलियों में कहता है, तुम्हें बाप समान बनना है, सम्पन्न बनना है। तो किन किन बातों में हमें सम्पन्नता की ओर जाना है, हम सम्पन्नता के नज़दीक पहुँच रहे हैं उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- सम्पन्नता के नज़दीक पहुँचे हैं या दूर हैं, वह तो अपनी अवस्था से ही पता चलेगा। मानो हमको बीच बीच में कोई बात देखकर व्यर्थ संकल्प चल जाते हैं, तो पता है ना, जब सम्पन्नता के नजदीक पहुंचेंगे तो उसमें फर्क होगा। जो भी हमारे में कमी होगी, अगर हमारा अपने पर अटेन्शन है तो वह कमी नज़र आयेगी। समझो व्यर्थ चलता है, उसके लिए मैं कोशिश करूं कि व्यर्थ नहीं आवे, खास मैं ऐसा क्या सोचूं, क्या पुरुषार्थ में अटेन्शन दूं, जो व्यर्थ न आवे।

प्रश्न:- जब ब्रह्मा बाबा के बारे में सोचते हैं या सुनते हैं और अपने को देखते हैं, उनके साथ अपनी भेंट करते हैं तो सूक्ष्म वा स्थूल दोनों में बहुत डिफरेन्स दिखाई देता है, तो उस दूरी को निकालने के लिए हमें क्या करना होगा?

उत्तर:- करना तो हर एक को अपना पुरुषार्थ है। अपने में जो कमी दिखाई दे, उसकी तरफ अटेन्शन जाए और फिर पुरुषार्थ करें। ऐसे ही नहीं, ठीक हो रहा है, ठीक हो जायेगा, नहीं। लेकिन हमारी कमी क्या है, वह चेक होवे और उस पर अटेन्शन हो।

प्रश्न:- बाबा कहता है, बच्चे तुम्हें दु:खी, अशान्त आत्माओं की पुकार सुनाई नहीं देती है, लेकिन उन आत्माओं तक तो हमारा संकल्प पीछे जायेगा पहले जो हमारे आजू बाजू में रहते हैं, जो वातावरण है, कम से कम वहाँ तक तो हमारा संकल्प जावे, अभी तक तो वह भी नहीं होता है?

उत्तर:- हो सकता है, हमारे संकल्प में पॉवर कम हो लेकिन जो लेने वाले हैं उन्हों को भी तो होना चाहिए। लेने वाले को लेने की इच्छा ही नहीं है तो आपका पहुंचेगा कैसे।

प्रश्न:- जैसे कहावत है दिया के तले अंधेरा, ऐसे कभी कभी महसूस होता है, हम संकल्प करते हैं लेकिन वह अंधेरा दूर नहीं हो पाता है।

उत्तर:- उसके लिए बहुत पॉवरफुल योग चाहिए, क्योंकि उसके संस्कार बहुत कड़े हैं, उसके लिए फिर कॉमन योग नहीं चलेगा। आफीशल पावरफुल योग, चलते फिरते उसको देवें, यह हमारे अटेन्शन में रहे, मुझे यह करना ही है तो फिर हो जायेगा।

प्रश्न:- दादी बाबा कहता है, पारस को छूने से भी लोहा पारस हो जाता है, अगर हमारी स्थिति पारस जैसी बनी है तो हमारे आजू बाजू रहने वालों में कुछ तो चेंज दिखाई देना चाहिए?

उत्तर:- उसमें फिर इतनी पॉवर चाहिए जो उस तक पहुंचे। अभी तक इतनी पॉवर नहीं है जो उस तक पहुंचे। अपने तक तो ठीक है, खुद बना है लेकिन इतनी पावर नहीं है जो दूसरे तक भी पहुंचे। उसके लिए स्पेशल अटेन्शन देना पड़ेगा। अगर उससे आपका कनेक्शन होगा और वह भी समझता है कि यह पावरफुल है, इसका मेरे को मिल सकता है, तभी तो होगा ना। ऐसे ही आप उसको दे रहे हो, उसको भावना ही नहीं है, तो वह कैसे चेंज होगा।

प्रश्न:- बाबा तो कहता है – जैसा कर्म मैं करूंगा मुझे देख सब करेंगे, अगर मैं श्रीमत पर ठीक चल रहा हूँ, तो मेरे साथ रहने वालों को कुछ तो प्रेरणा मिलनी चाहिए? जबकि बाहर वाले बहुत अच्छी प्रेरणायें लेकर जाते हैं?

उत्तर:- उठाने वाला भी तो चाहिए ना! भले पानी बह रहा है लेकिन उसके पास बर्तन ही नहीं है, तो भले कितना भी अच्छा पानी बह रहा हो, वह कैसे उठायेगा। आजू बाजू वालों को हमारी हल्की हल्की कमी भी फील होती है, इसलिए वह उसी रूप से देखते हैं, उनकी भावना नहीं होती है। बाहर वालों को हमारी कमी दिखाई नहीं देती है इसलिए उनकी भावना बहुत रहती है इसलिए वह चेंज हो जाते हैं, साथ वाले नहीं होते। फिर वायुमण्डल का भी प्रभाव होता है। संग का भी असर पड़ता है। समझो मैं किसी को प्यार दे रही हूँ, लेकिन लेने वाले का फेथ वा भावना नहीं है तो वह लेगा ही नहीं। ओम शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

ज्ञान-वृत्तियों का है, वृत्तियों को शुभ भावना से सम्पन्न बनाओ

1) बाबा ने हम बच्चों को लक्ष्य दिया है कि बच्चे तुम्हें डबल लाइट बनना है। इस स्थिति में न कोई इच्छा रहेगी, न कोई फीलिंग रहेगी, न कोई उदासी रहेगी, न कोई किसी को देखेंगे। जैसे बाबा कहते आँखें खोल कर बैठो। आँखें खोलकर बैठते हैं, देखते बाबा को है। ऐसे सदा ही देखते भी कुछ न देखो।

2) एक तो हमको ड्रामा का ज्ञान है, बाबा जिम्मेदार है, बाबा अथॉरिटी है, सेवायें बाबा की है, हम बाबा के हैं, ज्ञान दाता बाबा, वरदान देने वाला बाबा, जब हर बात में बाबा ही बिन्दु है तो हम क्या बिन्दु लगावें। हम सुखदाता की सन्तान सुखदाता है, सुख स्वरूप हैं। हमें मास्टर सर्वशक्तिमान बन विघ्न विनाशक बनना है। एक बात आप प्रैक्टिकल करो–सवेरे-सवेरे उठते तीन बातें याद करो, पहले बाबा, फिर मनमनाभव, फिर अपने को प्रैक्टिकल में इस नशे में ले आओ, हम हैं मास्टर सर्वशक्तिमान्। मास्टर सर्वशक्तिमान् माना ही योगबल द्वारा विघ्नों का विनाश करने वाले। दूसरा, हम हैं बाबा के डबल लाइट बच्चे। बाबा कहा, लाइट हो गये, याद किया तो लाइट का ताज मिल गया। तो हम हैं डबल लाइट। तीसरा, सदैव सर्व को शुभ भावना शुभ कामना का वायब्रेशन दो। फिर है मुझे सदा अपार खुशी में झूमते रहना है, कोई शक्ति नहीं जो मेरी खुशी को गायब करे, ये नशा चाहिये। मुझे बाबा मिला इससे बड़ी कोई खुशी नहीं है। खुशी गायब माना बाबा गायब। कोई कहता इसने मेरी खुशी गायब कर दी, माना उसने आपका बाबा गायब कर दिया। रावण ने राम को गाली दी तो क्या राम अपनी शक्ति को भूल गया! बोलने वाले ने बोल दिया, उसको थैंक्स दो। हमें माया को जीतना है या माया से हारना है? हमें सर्व इच्छाओं को पूर्ण करने वाला बाबा मिला, बाकी क्या इच्छा चाहिये! बाबा ने हमें बहुत नशा चढ़ाकर ऊंचा बनाकर रखा है। इसीलिये किसी प्रकार की न उदासी, न चिन्ता, न ममता। बाकी हम क्या हुए? हम हो गये नष्टोमोहा। बाबा और बेहद की खुशी हमारा खजाना है। इसी मस्ती मे रहते हैं तो मस्त रहते हैं।

3) भागवत में एक कहानी आती है - दुर्योधन और अर्जुन दोनों भगवान के पास गये। दुर्योधन ने कहा हमें आपकी माया चाहिए। अर्जुन ने कहा हमें आप चाहिए। तो दुनिया भगवान की माया मांगती। हम कहते हमें तू चाहिए। जीत किसकी हुई? जिसके साथ एक भगवान था।

4) हमें वरदान है निश्चय बुद्धि विजयन्ती। एक एक बात में हम विजयन्ती हैं। संगमयुग है ही विजयी बनने का, फिर हार क्यों होती? अवज्ञा क्यों होती! विकर्म क्यों होते! कभी-कभी कहते इसने मेरा अपमान किया, मैं कहती किसने किया? बाबा ने किया? बाबा तो हमें कितना बड़ा स्वमान का सिंहासन देता। माया तो अपमान ही करेगी। माया हमारा क्या सत्कार करेगी? माया के अपमान में तुम क्यों अपमानित होते। मेरा स्वमान मेरा बाबा है। बाबा ने मुझे पहला स्वमान दिया -तुम अपने स्वधर्म में रहो। स्वमान दिया तू देवता हो, मैं उस स्वमान के सिंहासन पर बैठूँ -हमें बाबा ने राजतिलक दिया, तुम राजाओं का राजा बनने वाले देवता हो।

5) कई कहते हैं फलाना मेरा अपमान करता, इज्जत नहीं करता। इसने मुझे गाली दी, लेकिन वो गाली तुम्हें कहाँ लगी? मैं पूछती तुम अपनी इज्जत करते! तुम्हारी कर्मेन्द्रियाँ इज्जत करती? अगर तेरी इन्द्रियां तेरी इज्जत नहीं करती, तो दूसरों से क्या इज्जत मांगते हो। कहते कभी-कभी मेरे को गुस्सा आ जाता। अगर तुम्हारी कर्मेन्द्रियां, तुम्हारी जीभ, तुम्हारी इज्जत नहीं करती तो तुम दूसरे से क्या मांगते। अगर स्थिति को एकरस बनाना है तो अल्पज्ञता की छोटी-छोटी बातों को भूल सदाकाल के नशे में रहो।

ये मान है, ये अपमान है, ये इज्जत है, ये बेइज्जत है ... ये सब बातें छोड़ दो। अगर हम अपनी सीट पर बैठेंगे तो सारी दुनिया मेरी इज्जत करेगी। सीट पर बैठने वालों की डबल पूजा होती।

6) यह ज्ञान वृत्तियों का है, जितना एक-एक के प्रति शुभ भावना रहेगी, तो हमारी शुभ भावना और कामना ही सारे विश्व को बदलती। एक से शुभ भावना लो और सबको दो। अगर किसी से सूक्ष्म में भी नफरत है तो यह भी पाप है। सूक्ष्म में भी यदि किसी से ईर्ष्या करते तो यह भी पाप है। अगर ईर्ष्या करनी है तो एक बाबा से करो, जो हमें दौड़ाकर इतना बड़ा जम्प दिलाता है।

7) मैं अपना अनुभव सुनाती - मेरी बुद्धि में सदा यही रहता हम पंछी हैं परदेशी, हमारी डालें हैं तो सभी, नहीं तो कोई नहीं। यह पुरानी दुनिया हमारी नहीं, यह तो खत्म हुई कि हुई। हम तो उड़कर जाने वाले हैं। मैं तो उड़ने वाला पंछी हूँ, अगर कोई इस डाल का इस पुरानी खाल का नाज़ करता तो इसका क्यों नाज़ करें, हमें तो बड़ा बाबा आया है हसीना बनाने। इस पुरानी सड़ी हुई डाल का क्या नाज़ करते।

8) अपनी स्थिति सदैव सागर के समान रखो जिसमें अनेक लहरें हैं। कोई कहते सागर की लहरों से मेरी नींद खराब होती, कोई कहेंगे कैसी सुन्दर मन को लुभाने वाली लहरें हैं। कोई कहेंगे यह सागर खारा है, कोई कहेंगे यही सागर तो नदियों को मीठा पानी देता। इसी से तो हमें अनेक रत्नों की थालियां मिलती। हमें तो उस आनन्द के सागर में, प्यार के सागर के प्यार में रहना है। हम दूसरी लहरों में क्यों आयें! दुनिया की लहरें अपना काम करें, हम अपना काम करें, हम उन लहरों में न लहरायें। हम उन लहरों से ऊपर रहें। कहते क्या करें, दुनिया की परिस्थिति ऐसी है, अरे वो तो हैं ही ना। दुनिया तो अनेक चपेटों में लाने वाली है। दुनिया है ही झमेलों की, हमें उसमें नहीं आना है। हम तो बाबा की लहरों में रहते। एक की लहरों मे लहराओ तो सब बहाने खत्म हो जायेंगे। अपनी स्थिति में रहो, परिस्थिति को नहीं देखो, परिस्थिति के ऊपर मुझे नहीं रहना है, वो है ही पराई स्थिति, रावण की स्थिति। स्वस्थिति है ही हमारे बाबा की दी हुई, उसमें रहो।

9) अपने को सदा बाबा से भेंट करो, दूसरे किसी से न मांगो न भेंट करो। एक से मांगों एक की खुशी में रहो। कभी भी अपने पर्सनल दोस्त नहीं बनाओ। स्थिति को कभी बिगाड़ेगा तो दोस्त बिगाड़ेगा, संग का रंग लगता इसलिए न किसी को दोस्त बनाओ, न किसी के दोस्त बनो। सबसे दोस्ती रखो, खुदा को दोस्त बनाओ। संग कभी ऊंचा भी ले जाता लेकिन जास्ती करके नीचे ही ले आता।

10) बाबा ने कहा बच्चे, तुम्हारी सूरत से बाप की सीरत दिखाई दे फिर अगर कोई कहे मेरी मूड आफ होती तो किसका साक्षात्कार करायेंगे? बाप का या माया का? मूड आफ माना बाबा से आफ हो गये, लाइट का स्वीच आफ हो गया। जो आफ हो जाता, आफ माना मुर्दा, स्थिति मुर्दे समान हो जाती, इसलिए अपने को कभी भी आफ नहीं करो। हमें बाबा ने ऑन कर दिया, फिर ऑफ क्यों होते? एक बार स्थिति बिगड़ी माना 100 बार का नुकसान।

11) ज्ञानी का एक लक्षण सदैव गाया जाता – एक ने कहा दूसरे ने माना, उनका नाम है ज्ञानी। इससे एक मत रहेंगे। सदैव हाँ जी का पाठ पढ़ो तो कभी क्यों, क्या नहीं उठेगा। बाबा ने कहा जिसके अन्दर क्यों रहता, उसके क्यों की क्यू खत्म नहीं होगी, वह क्यू में ही खड़ा रहेगा।

12) तुम सदैव खुशी में रहो। अपनी खुशी जैसी कोई वस्तु नहीं। खुशी खुद को खुद से प्राप्त होती। खरीदी नहीं जाती। बैटरी को सदैव चार्ज रखो उसको ऑफ नहीं करो। नहीं तो डिस्चार्ज हो जायेगी। ज्ञानी कहा ही उसको जाता है जो बाप के समान है। हम बाप के समान हो जायेंगे, न कि लीन हो जायेंगे। कदम-कदम अपनी दिनचर्या चेक करो। हम बाप के समान स्थिति वाले हैं! अच्छा।

विशेष अटेन्शन:-

निमित्त टीचर्स बहिनें ध्यान दें तथा अपनी क्लासेज़ के सभी भाई बहनों का ध्यान अवश्य खिंचवायें

आप जब आबू में अपनी पार्टीज़ को दर्शनीय स्थलों का अवलोकन (साइडसीन) कराने ले जाते हैं, तो विशेष आबू के मन्दिरों में वा दर्शनीय स्थलों पर अपनी योगयुक्त अवस्था में शान्ति के प्रकम्पन्न फैलायें। लोग आपको बहुत ऊंची नज़र से देखते हैं। विशेषकर देलवाड़ा मन्दिर अथवा पहाड़ी आदि पर जाते अथवा उसका अवलोकन करते समय आपस में कोई भी इस प्रकार की वार्तालाप न करें कि यह मूर्ति या यह तपस्या की कोठरी हमारी है, यह तुम्हारी है.. अथवा यह हमारे मम्मा की है, यह बाबा की है। इस प्रकार के शब्द सुनकर मन्दिर के पुजारियों अथवा प्रबन्धकों की भावनाओं को ठेस पहुंचती है। उन्होंने कई बार यह कम्पलेन्ट लिखत रूप में हमारे पास भेजी है।

आप सब जानते हैं कि जैनियों के मन्दिर उनके तीर्थांकरों की तपस्या के यादगार हैं, यदि हम उनके सामने कुछ भी शब्द बोलते हैं तो उनके अनुयायी बहुत नाराज़ होते हैं। फिलहाल अभी तो उन्होंने बी.के. के लिए मन्दिर में प्रवेश करने की भी मना कर दी है और कुछ अभद्र शब्दों का भी प्रयोग किया है, इससे अपनी संस्था की छवि खराब होती है इसलिए कृपया किसी भी स्थान पर जाते वहाँ की मर्यादाओं का पूरा ध्यान रखें।

दूसरा नक्की लेक की सैर करते समय भी आपस में जो चर्चा करते कि इधर बाबा की पहाड़ी है, इधर मम्मा की पहाड़ी है। भले साकार में बाबा मम्मा उधर बच्चों को योग कराने के लिए ले जाते थे लेकिन अभी जिन्होंने उन स्थानों को खरीदा हुआ है, अगर वे इस प्रकार के कोई शब्द सुनते हैं तो उन्हें बहुत खराब लगता है और वे बार-बार कम्पलेन करते हैं। अत:आप सभी से अनुरोध है कि कृपया यहाँ के मन्दिरों में या कहीं भी अपने स्थानों पर भी मन्दिरों आदि में जाते हैं तो वहाँ की मर्यादाओं का पूरा ध्यान रखें, अपनी रॉयल चलन और साइलेन्स की भाषा द्वारा ही हम ऊंचे ज्ञान और ज्ञानदाता को प्रत्यक्ष कर सकते हैं। धन्यवाद।